प्रथम अध्याय
हिमाचल प्रदेश का परिचय

भूमिका

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

भौगोलिक स्थिति

भाषा, धर्म, कला, वेशभूषा, मेले, त्यौहार

मनोरंजन के साधन

मुख्य स्थल

12 जिलों का संक्षिप्त वर्णन

प्रथम अध्याय
हिमाचल प्रदेश का परिचय

भूमिका :

हिमालय की गोद में स्थित एक अनुपम राज्य जहां पर राजा हिमाचल, गौरजा के पिता तथा शंकर भगवान् के ससुर राज्य करते थे। अपनी सांस्कृतिक धरोहर को अपने आप में समेटे हुए हैं तथा पहाड़ी संस्कृति का संरक्षण सम्वर्धन करके आज भी हिमाचल प्रदेश अपनी कला संस्कृति के लिए विशिष्ट राज्य के रूप में पहचान बनाये हुये हैं।

"हिमाचल प्रदेश" जिस का नाम बड़े गर्व से लिया जाता है। वही "हिमाचल" जैसा कि नाम से ही प्रतीत होता है कि "हिम का आंचल" और देखने से यह नाम सजीव होकर आंखों के समक्ष आ जाता है, मानो एक सुन्दर स्त्री सफेद वस्त्र और दुशाला ओढ़े हुए अपनी ही धुन में मग्न, शांत होकर बैठी हो तथा जिसके आंचल में कहीं पहाड़ हैं तो कहीं अथाह गहरी नदियां एवं कहीं मखमली घास है, तो कहीं पर कल–कल करते झरने जिनकी मधुर ध्वनियां सहज रूप से ही किसी को अपनी ओर आकर्षित करने में समर्थ हैं वही हिमाचल प्रदेश सुन्दरता की मूर्त है।[1]

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :

हिमाचल एक ऐतिहासिक नाम है, जिसका विशद् वर्णन गोस्वामी तुलसीदास जी ने अपने रामचरित मानस के उस प्रसंग में किया है, कि जो शिव पार्वती विवाह के निमित अपना विशिष्ट स्थान रखता है। यद्यपि रामायण नें सीमाओं का वर्णन नहीं, फिर भी अनुमान यही होता है कि गिलगित से लेकर आसाम और डिबरूगढ़ तक ऊपर सारा तिब्बत और मानसरोवरादि स्थान हिमाचल के नाम से

---

1. हिमाचल सामान्य ज्ञान (वर्ष 2001) संकलन जगमोहन बलोखरा पृ० सं०. 1.

विख्यात रहे होंगे। क्योंकि इसी भू–भाग को देवभूमि और ऊत्तराखण्ड के नाम से भी पुकारा गया है। इसीलिए ये भी कहा गया है कि–

श्लोक :

"गायन्ति देवाः किल गीतकानि, धन्यास्तु ये पर्वत भूमि
भागे स्वर्गापर्वगस्थ च देवभूते, भवन्ति भूयात् पुरूषाः
सुरत्वात"

अर्थात् देवगण इस भू–भाग में आने के लिए सदैव लालायित रहते हैं, क्योंकि स्वर्ग और अपवर्ग का हेतु इसी सुखद पुण्यक्षेत्र को समझा जाता है। यही यज्ञ प्रधान देश भी माना गया है।[1]

यज्ञ के अर्थ यहां संकुचित सांप्रदायिक ढंग से ग्रहण नहीं करने चाहिए, अपितु परोपकार अतिथि सत्कार की स्वाभाविक जनसाधारण में भावना होने से ही इस को यज्ञ प्रधान पुण्यक्षेत्र देवभूमि उत्तराखण्ड कहा गया है।[2]

हिमाचल को अभी तक भारतवर्ष का सबसे शांतिप्रिय राज्य होने का गौरव प्राप्त है। शेष दुनिया की गतिविधियों से अछूता यह प्रदेश "देवभूमि" कहलाता है।[3] इसका परिचय हमें यहां पग–पग पर निर्मित मन्दिरों तथा यहां की सांस्कृतिक धरोहर से प्राप्त हो जाता है। अनेक कवियों ने हिमाचल या जिस हिमालय का वर्णन अपनी संस्कृत रचनाओं में किया, उनमें से महाकवि कालीदास, कविवर भट्ट शास्त्री भी एक हैं।[3]

हिमाचल प्रदेश की स्थापना 15 अप्रैल 1948 को पंजाब तथा शिमला की 30 रियासतों को मिलाकर की गई और 25 जनवरी 1971 को "श्रीमती इंदिरा

---

1 हिमाचल की झांकी लेखक : देवीदास मुसाफिर (25 अप्रैल 1972), पृ० सं० 3.

2 वही, पृ० सं० 3.

3 हिमाचली लोकगीतों में रागछाया (एक अध्ययन) कल्पना शर्मा पृ० सं० 1, (पी० एच० डी० थीसिस)

3 हिमाचल की झांकी लेखक : देवीदास मुसाफिर (25 अप्रैल 1972), पृ० सं० 4.

गांधी" ने शिमला आकर "रिज मैदान" में भारी हिमपात के बीच हजारों हिमाचलवासियों के सामने हिमाचल प्रदेश का 18 वें पूर्ण राज्य के रूप में उद्घाटन किया।[1]

हिमाचल प्रदेश भारत के उत्तर हिमालय की गोद में स्थित है। जिसकी सीमाएं उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, जम्मू–कश्मीर, चीन व तिब्बत को स्पर्श करती है।[2]

भौगौलिक स्थिति :

हिमाचल प्रदेश की भौगौलिक स्थिति 30^0,22" से 33^0,12" उत्तरी आक्षांस तथा 75^0,47" से 79^0,4" पूर्वी देशांतर है।[3]

हिमाचल प्रदेश के भू–क्षेत्र को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है :–

1. *निचली पहाड़ियां या शिखर हिमालय*
2. *मध्य हिमालय*
3. *उच्च हिमालय या शिखर हिमालय*

भारतीय सर्वेक्षण विभाग के अनुसार हिमाचल प्रदेश का क्षेत्रफल 55, 673 वर्ग किलोमीटर है तथा इसे 12 प्रशासनिक खण्डों में विभाजित किया गया है। क्षेत्रफल की दृष्टि से हमीरपुर सबसे छोटा तथा लाहौल–स्पिति सबसे बड़ा जिला है और जनसंख्या की दृष्टि से कांगड़ा प्रथम स्थान पर है।[4]

---

1 हिमाचली लोकगीतों में रागछाया (एक अध्ययन) कल्पना शर्मा पृ० सं०, 2 (पी० एच० डी.० थिसिस)

2 वही, पृ० सं० 1, (पी० एच० डी० थिसिस)

3 हिमाचल सामान्य ज्ञान–संकलन – जगमोहन बलोखरा पृ० सं०,

4 हिमाचली लोकगीतों में रागछाया (एक अध्ययन) कल्पना शर्मा पृ० सं०, 2 (पी० एच० डी० थिसिस)

हिमाचल के विकास के लिए पूरे क्षेत्र को 72 विकास खण्डों में बांटा गया है। इस समय प्रदेश में कुल 2,922 पंचायतें हैं। हिमाचल की जल विद्युत क्षमता भी असीम है। एक सर्वेक्षण के अनुसार यह क्षमता लगभग 25000 मैगावाट है।[1]

भाषा :

हिमाचल प्रदेश में कई भाषाओं और बोलियों का जन्म हुआ है। प्रदेश में विकसित चार मुख्य लिपियॉ है। मुख्यतः प्रदेश में हिन्दी, अंग्रेजी और उर्दू भाषाएं प्रचलित हैं। प्रदेश में लिखित भाषाओं के इलावा मौखिक बोलियों का भी प्रचलन है। इनमें मुख्यतः कांगड़ी, मण्डयाली, चम्बयाली, बिलासपुरी, बघाटी, सिरमौरी, कुल्लवी तथा किन्नरी आदि अपने–अपने क्षेत्रों में प्रचलित हैं।

धर्म :

यहां के सभी धर्म यहां की संस्कृति में पूर्णतया घुल–मिल गये हैं। विभिन्न धर्मों के प्रभाव से हिन्दु धर्म के प्रधान पांच सम्प्रदाय लोकप्रिय हुए। शैव, शाक्त एवं वैष्णव धर्म यहां की संस्कृति पर अमिट छाप हैं। यहां के सीमान्त क्षेत्र पर बौद्ध धर्म का प्रभाव देखा जा सकता है। ईसाई धर्म का प्रभाव व मुसलमानों की मस्जिदें, मजारें तथा सिखों के गुरूद्वारे तथा अन्य धार्मिक तीर्थस्थल जहां हजारों लोग दूर–दूर से दर्शन करने के लिए आते हैं। प्रदेशवासियों की आस्था सभी पर है तथा किसी से भी कोई वैर–विरोध नहीं है। विभिन्न धर्मों के लोग होने पर भी वे लोग शांतिप्रिय हैं तथा अपने आप में ही मस्त रहते हैं।[2]

इधर न केवल नये साहित्य का सृजन हुआ बल्कि आयुर्वेद चिकित्सा शास्त्र और शिक्षा के क्षेत्र में भी सराहनीय योगदान रहा है। हिमाचल का प्रत्येक भाग धार्मिक आख्यायनों और लोकगाथाओं से आज भी झंकृत हो रहा है।[3]

---

1 हिमाचल सामान्य ज्ञान–संकलन– जगमोहन बलोखरा पृ० सं०, 5 (वर्ष 2001)

2 लोक मानस के सुरीले स्वर 2001 पृ० सं० 2 डॉ० मनोरमा शर्मा

3 लोक मानस के सुरीले स्वर डॉ० मनोरमा शर्मा पृ० सं०, 2.

कला :

कला की दृष्टि से यहां की प्राचीनतम् धरोहर अनोखी है। हिमाचल की मूर्तिकला, चित्रकला, भवन निर्माण कला, काष्ठ कला आदि के क्षेत्रों में अद्वितीय उपलब्धियां हैं। हिमाचल प्रदेश की निर्माण शैली विशेष उल्लेखनीय है। कांस्य, पीतल, चांदी, सोना, अष्टधातु आदि की निर्मित विशाल मूर्तियां हिमाचल की उत्कृष्ट कलाकृत्तियां मानी जाती हैं। शायद ही कोई ऐसा स्थान होगा जहां किसी न किसी देवता का मन्दिर न हो। कांगड़ा शैली की चित्रकला अत्याधिक प्रसिद्ध है जिसका संलग्न चण्ड़ीगढ़ के संग्रहालय में किया गया है।[1]

साहित्य के क्षेत्र में किसी हिमाचल की सांस्कृतिक धरोहर अत्यन्त सराहनीय है। (मौखिक साहित्य के रूप में लोकगीत, लोकगाथाएं, लोकवार्ता तथा लोकनाट्य। पहले यहां के जीवन के अभिन्न अंग हैं। किसी न किसी रूप में इनका प्रयोग प्रत्येक उत्सव और समारोह पर होता है।) हस्तगत् शिल्प कलाएं यहां के जनजीवन का अंग है। प्रत्येक जगह की अपनी–अपनी विशेषताएं हैं। चम्बा का रूमाल, तिब्बती डिजाईनों के कालीन, किन्नौर के गुदमें, कुल्लू की शाल व टोपियां आदि देश भर में प्रसिद्ध हैं। हिमाचल प्रदेश जहां एक ओर प्राकृतिक सौंदर्य से विभूषित है उसी प्रकार वह अनेक कला कृतियों से भी बहुविध अलंकृत है जिनमें अनेक सांस्कृतिक धाराओं का अद्वितीय संगम दर्शनीय और सराहनीय है।[2]

वेशभूषा :

साधारण सी वेशभूषा, रंग–बिरंगे परिधानों से सजी–स्त्रियां पारम्परिक वस्त्राभूषणों का मोह लिए हिमाचलवासी अपने सांस्कृतिक गौरव और वैभव संजाये हुए हैं। यह सांस्कृतिक धरोहर यहां के लोकप्रिय भावों, विश्वासों और मान्यताओं के रूप में सांस्कृतियों के मिलन का प्रतिबिम्ब है।

---

1 लोक मानस के सुरीले स्वर डॉ० मनोरमा शर्मा पृ० सं०, 3,5.

2 हिमाचल प्रदेश (सामान्य ज्ञान) संकलन जगमोहन बलोखरा

यहां के लोगों की वेशभूषा में विभिन्नता पाई जाती है। ज्यादा ठंड होने की वजह से गर्म कपड़ों का प्रयोग किया जाता है। यहां पर अधिक दोहडू ऊन की चादर जो कमर के नीचे बांधी जाती है। ढाठू (एक चकोर सूती वस्त्र जो सिर पर बांधा जाता है)।[1]

आसपास के क्षेत्रों में 'रेशटा' डाला जाता है। गद्दियों का 'चोला' जो लम्बे कोट की तरह पूर्णतः ऊन का बना होता है। निम्न भागों में 'लहंगा' पुरूषों के लिए टोपी, कोटनुमा 'लोई' लिवास विशेष परिधान है।

हिमाचल प्रदेश में पाई जाने वाली प्रमुख जनजातियां हैः– गुज्जर, कन्नौरा या किन्नी, लाम्बा, खम्पत, भोत, जाद, लाहुला पंगवाला तथा स्वांगला इत्यादि।[2]

मेले :

हिमाचल प्रदेश में कई मेले राज्यस्तरीय घोषित किये गये हैं। प्रदेश भर में मेले व उत्सव बड़े चाव से मनाए जाते हैं। ये मेले धार्मिक, सांस्कृतिक तथा व्यापारिक महत्व के होते हैं। कुल्लू का दशहरा तो विदेशों तक प्रसिद्ध हैं। इसके इलावा मण्ड़ी की शिवरात्री, रामपुर की लवी, बिलासपुर की नलवाड़ी और सिरमौर का रेणुका मेला, चम्बा का मिंजर मेला व सुजानपुर की होली मेला प्रसिद्ध व लोकप्रिय है। इनमें लोक गायक, नर्तक व वादक अपनी–अपनी कला का प्रदर्शन करते हैं। मेले में स्थानीय लोग पारम्परिक वेशभूषा में आते हैं। वह सभी सामूहिक रूप में शामिल होकर लोकसंगीत का आनन्द लेते हैं।

---

1 बिलासपुर और कुल्लु के पारम्परिक लोकवाद्यों का विश्लेषणात्मक अध्ययन जयराम शर्मा M.PHIL Dissertation)

2 लोकमानस के सुरीले स्वर डॉ० मनोरमा शर्मा पृ० सं०, 2.

मनोरंजन के साधन :

हिमाचल प्रदेश के लोगों के लिए मनोरंजन के साधन हैं लोक गायन, नृत्य जैसे– किन्नौर का छोहरा नृत्य, मण्डी, कुल्लू की नाटी, सिरमौर व चम्बा में भी नाटी, शांद व शबू नृत्य लाहौल–स्पिति में यह नृत्य प्रमुख हैं।

मुख्य स्थल :

हिमाचल प्रदेश में कुछ गर्म जल स्रोत हैं जो मनीकर्ण, कसोल, खीरगंगा तथा वशिष्ठ कुल्लू में तथा तत्तापानी जिला मण्डी में स्थित है। प्रदेश में पाये जाने वाले खनिज पदार्थ जैसे नमक, अभ्रक, चूना पत्थर तथा स्लेट हैं। कुल्लू व हमीरपुर में यूरेनियम के भण्डार मिले हैं। हिमाचल प्रदेश का राजकीय पक्षी 'मोनाल' व जानवर 'कस्तूरी मृग' हैं।[1]

जिले :

प्रशासनिक सुविधा के लिए प्रदेश को 12 जिलों में बांटा गया है। जो इस प्रकार हैं:– शिमला, बिलासपुर, मण्ड़ी, कुल्लु, चम्बा, सोलन, हमीरपुर, ऊना, किन्नौर, लाहौल–स्पिति सिरमौर, कांगड़ा। प्रत्येक जिला तहसीलों में बांटा है जिस अन्तर्गत उपतहसील तथा पंचायतें हैं।

हिमाचल प्रदेश के संक्षिप्त परिचय के साथ 12 जिलों के पारम्परिक लोक कलाकारों का संगीत क्षेत्र में योगदान पर प्रकाश डाला गया है।

हिमाचल प्रदेश अपनी इसी अनमोल सांस्कृतिक धरोहर के कारण समस्त भरतीयों के लिए आकर्षण का केन्द्र है। भारत ही नहीं अपितु विदेशी लोगों को भी हिमाचल खूब भाता है और उनका भरपूर मनोरंजन करता है। पर्वतीय क्षेत्रों में यही एक गौरवमयी प्रान्त है जहां इतनी विविधता होने पर भी आपसी तालमेल तथा एक–रसता है।

---

1 लोकमानस के सुरीले स्वर डॉ० मनोरमा शर्मा पृ० सं०, 6.